COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 11-15
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

'हस्तिनापुर' और 'देहान्तर' में स्त्री–अधिकारों के प्रश्न

रोहित कुमार पटेल
वरीय शोधप्रज्ञ
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

शोध–सारांश :–

नन्द किशोर आचार्य एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी दृष्टि ऐतिहासिक–पौराणिक स्त्री चरित्रों पर खूब गई है। उन्होंने इस तथ्य को महसूस किया है कि यद्यपि भारतीय समाज में स्त्रियों को देवी का रूप माना जाता है लेकिन धरातल पर स्थिति बिल्कुल भिन्न है। देवी कही जाने वाली स्त्रियाँ अपने साधारण अधिकार भी प्राप्त नहीं कर सकी हैं। राजमहलों में राजा के कमरों में रहने वाली पटरानियों से लेकर सामान्य घरों तक कहीं भी स्त्री को वह सम्मान नहीं मिलता है जो उसे मिलना चाहिए। नन्द किशोर आचार्य ने इसी लिए अपने नाटकों में सामाजिक परिस्थितियों से त्रस्त स्त्री–चरित्रों को उभारा है जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई है। यह कहने में आज भी कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि स्त्रियाँ अभी भी शोषित हैं। भारतीय समाज और सरकार भले ही यह दावा करे कि आज स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं लेकिन सच्चाई यह है कि यह पूरा नैरेटिव एकपक्षीय है। दरअसल यह बात वही स्त्रियाँ या पुरुष कहते हैं जो पितृसत्तात्मक समाज के समर्थक हैं। आजाद स्त्रियाँ, अपने पंखों को खूब फैलाने वाली स्त्रियाँ, आजादी से आकाश में उड़ने वाली स्त्रियाँ आज भी समाज में बदचलन ही कही जाती हैं। आचार्य जी ने इन तमाम मुद्दों को अपने नाटकों में उठाया है। उन्होंने पाठकों के समक्ष एक ज्वलंत प्रश्न खड़ा किया है कि क्या आज स्त्रियों को वह अधिकार मिल गया है, जिसकी कल्पना एक सभ्य समाज में हर व्यक्ति कर सकता है?

बीज–शब्द : स्त्री, अस्मिता, अधिकार, पितृसत्ता, आधुनिक युग, पौराणिक, ऐतिहासिक, मातृत्व

प्रस्तावना :–

यह भारतीय समाज का दुर्भाग्य है कि यहाँ स्त्रियों को सामान्य मनुष्य नहीं माना जाता, उन्हें देवी के खांचे में फिट करने की कोशिश की जाती है। दरअसल उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर स्थिति को शांति से स्वीकार और अंगीकार करें। अगर उन्होंने किसी भी अवसर पर विद्रोह किया तो समाज उन्हें बदचलन, कुलटा जैसे विशेषणों से नवाजने में बिल्कुल नहीं चूकता। आचार्य जी के उक्त दोनों नाटकों में स्त्री अस्मिता से जुड़े अनेक प्रश्नों को बहुत सूक्ष्मता से उठाया गया है। पौराणिक कथा को आधुनिक कलेवर में ढाल कर आचार्य जी ने एक नया प्रयोग किया है। भारतीय समाज केवल स्त्रियों की

© Copyright @ Authors

मातृत्व शक्ति को ही सम्मान देता है, इसके अलावे महिला की अस्मिता और अस्तित्वगत प्रश्नों के प्रति जो बेरुखी पौराणिक काल से बनी हुई है वह आज भी यथावत है। आचार्य जी ऐसी मानसिकता पर न केवल चोट करते हैं बल्कि पौराणिक स्त्रियों के माध्यम से, उनके यक्ष प्रश्नों से उसे खंडित करने का प्रयास करते नजर आते हैं।

शोध–विस्तार :–

प्रसिद्ध नाट्य आलोचक भारत रत्न भार्गव ने 'हस्तिनापुर' नाटक के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। उन्होंने लिखा है– "हस्तिनापुर की कथा परिचित होते हुए भी ऐसे अन्तरंग प्रसंगों से साक्षात्कार करवाती है जो विशुद्धतः कौरव वंश की नारी-त्रासदी के सूत्र हैं। 'शुभा' इस नाटक का केन्द्रीय चरित्र है। नाटककार इसके माध्यम से एक ऐसी दृष्टि से विवेचित करता है जो दर्शक को चौंका देने वाली हो सकती है।"[1] उक्त पंक्तियाँ अपने आप में बहुत कुछ बयां करती है। जिस व्यक्ति (भीष्म) को पूरी दुनिया महान मानती है, उसकी छवि को अपने प्रश्नों से शुभा खंडित करती है। भीष्म भारतीय समाज में आदर्श माने जाते हैं लेकिन शुभा के ज्वलंत प्रश्नों के समक्ष वे निरुत्तर हैं। शुभा जब कुंती से यह कहती है कि– "तुम ने देखा होता युवा सत्यवती का वैधव्य, अम्बा का देहत्याग, अम्बिका का दुख, अम्बालिका का तिल-तिल कर गलना तो तुम समझती कि भीष्म प्रतिज्ञा ने क्या किया है निर्दोष जीवनों के साथ।"[2] दरअसल उक्त पंक्तियों में शुभा केवल एक व्यक्ति को आरोपित नहीं कर रही है बल्कि सामाजिक आदर्शों के नाम पर होने वाले महिलाओं के उत्पीड़न पर प्रश्न उठा रही है। शुभा यह मानती है कि यह पूरी व्यवस्था महिला विरोधी है। आज आधुनिक युग में भी महिला आरक्षण आदि के नाम पर कितने ही ढोंग क्यों न किए जाएं। सच्चाई यह है कि आज भी महिलाओं को केवल आदर्शों की घुट्टी पिलाई जाती है। अधिकार और हक की बात करने वाली स्त्रियों को खारिज करने की हर संभव कोशिश आज भी की जा रही है।

नाटक की पात्र अंबिका जब अपने अधिकार की बात करती है तब भीष्म उन्हें मर्यादा में रहने की सीख देते हैं जिस पर वह तत्क्षण जवाब देती है– "मर्यादा हमारे लिए ही है केवल ? कुरुवंश के लिए नहीं?"[3] दरअसल इस समाज का यह दुर्भाग्य है कि ऐसी महिलाएँ जो अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहती हैं वे भी इस तरह की महिलाओं से घिरी हुई हैं जो उनकी चमक को धुंधला करने का प्रयास करती हैं। सत्यवती जैसी महिलाएं अंबिका और शुभा जैसी अधिकार सजग महिलाओं को भावनात्मक धरातल पर घसीट कर उनसे वह कार्य करवा लेती हैं जिसके खिलाफ वे विद्रोह करती हैं। सत्यवती जैसी महिलाएं पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पोषक हैं। नियोग जैसी अमानवीय प्रथा के लिए सत्यवती अंबिका को राजी करने की कोशिश करती है। अंबिका तब स्पष्ट जवाब देती है– "उस यातना में दुबारा न

© Copyright @ Authors

डालें, माँ। पहली बार की स्मृति ही पर्याप्त है जीवन भर के लिए। उन्हें अम्बालिका के पास क्यों नहीं भेज देतीं। मुझे पुत्र की कोई लालसा नहीं है अब।"[4]

स्त्रियों के शरीर को पौराणिक काल से लेकर आधुनिक काल तक केवल बच्चा पैदा करने वाली मशीन ही समझा गया है। आज की आधुनिक स्त्री इस बात का विरोध करती है। बच्चा पैदा करने के लिए वह पुरुष का चुनाव करना चाहती है। लेकिन उसके इस स्वाभाविक अधिकार से भी उसे वंचित रखा जाता है। अंबिका स्पष्ट रूप से कहती है– "कोई भी स्त्री किसी पुरुष को प्रेम के बिना कैसे सह सकती है? प्रेम के बिना देह सौंप देने से बड़ा अपमान भी क्या हो सकता है किसी का?"[5] बिना प्रेम के पुरुष को देह सौंपना एक त्रासदी है। महत्त्वपूर्ण यह है कि यह त्रासदी वैश्विक और शाश्वत है। हर काल में और हर देश में स्त्रियों के साथ ऐसा होता रहा है। 'नियोग' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी सहायता से वह स्त्री बच्चे पैदा करती है, जिसका पति मर गया हो या अशक्त हो। अंबिका इस संदर्भ में कहती है कि स्त्री की सहमति के बिना किसी भी पुरुष के साथ उसे शारीरिक संबंध बनाने के लिए मजबूर करना सर्वथा पाशविक है। वह कहती है– "स्वतंत्रता होनी चाहिए वरण की। नियोग में दोनों पक्षों की सहमति इसीलिए अनिवार्य है।"[6]

राजमहल की मोटी दीवारों के पीछे वंचित स्त्रियों के अधिकारों के लिए ही शुभा भीष्म जैसे तथाकथित महामानव से भी टकराने से पीछे नहीं हटती। मर्यादा, संयम, धैर्य आदि की घुट्टी पिलाने वाले भीष्म को वह टका आ जवाब दे देते हुए कहती है– "कुरुवंश! क्या है यह कुरुवंश ? कुरुवंश तो आप की प्रतिज्ञा के दिन ही समाप्त हो गया था। अब वह मरा हुआ बच्चा है जिसे बन्दरिया की तरह चिपटाये रहिये छाती से। कुरुवंश के स्थान पर अब महामुनि व्यास की सन्तान है जिस में सब से योग्य विदुर है। पर आप उसे राजा नहीं बनायेंगे क्यों कि वह दासी-पुत्र है?"[7] शुभा समाज के तमाम नियमों की बखिया उधेड़ती है। वह इस तथ्य को स्पष्ट रूप से देखती है कि 'महान लोग' शारीरिक संबंध स्थापित करते वक्त महिला की जाति के विषय में बहुत अधिक पूछ ताछ नहीं करते परन्तु जब बात उनके अधिकारों की आती है, विरासत सौंपने की आती है तब पुरुष जाति स्त्री की वंश परम्परा ढूंढने लगती है। वह भीष्म के सभी प्रपंचों पर प्रहार करती है और उनके ज्ञान के घमंड को अपने तर्कों से चकनाचूर कर देती है। वह भीष्म को आइना दिखाती हुई कहती है– "मैं जानती हूँ विदुर राजा नहीं बन सकता। आप मान लें तो भी राजत्व उस के स्वभाव में नहीं है। मैं तो केवल यही कहना चाह रही थी कि राजत्व को रक्तशुद्धि या वंश-परंपरा से न जोड़ें। वह गुणों पर आश्रित होना चाहिए।"[8]

सत्यवती भीष्म से बात करते हुए शुभा के व्यक्तित्व पर बिल्कुल सार्थक टिप्पणी करती हुई कहती है– "मैं समझ सकती हूँ उस की उद्विग्नता का कारण। वह राज्य नहीं, स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहती है।"[9]

© Copyright @ Authors

युद्ध की समाप्ति के बाद जब विदुर अपनी माता शुभा को अपने साथ चलने को कहता है। तब भी वह अपने अधिकारों की रक्षा करने को ही सर्वोपरि मानती है। वह अपने पुत्र के साथ जाने को तैयार नहीं होती है, और अपनी विवशता प्रकट करती हुई उस सच्चाई को उजागर करती हैं जिससे जूझने के लिए स्त्रियाँ अभिशप्त हैं। वह विदुर को कहती है– "तुम ने देखा होता वह सब । अनुभव की होती युवती सत्यवती की मनोदशा जब वह अशक्त वृद्ध की कामातुरता को सन्तुष्ट करने का माध्यम बनने को विवश थी। अम्बा का आत्मदाह क्योंकि उसे कोई स्वीकारने को तैयार न था। अम्बिका की वेदना जब वह अनिच्छापूर्वक अपनी देह सौंप रही थी। जिसकी वह कामना कर सकती, वह एक मूढ प्रतिज्ञा में बँधा था–सृष्टि की विरोधी प्रतिज्ञा में शापग्रस्त हो जैसे। यह सब देख पाते तब तुम जानते वेदना क्या होती है।"[10]

'हस्तिनापुर' की तरह ही 'देहान्तर' में नन्द किशोर आचार्य स्त्री की अस्मिता के प्रश्नों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। ख्यातिलब्ध नाट्यालोचक नेमिचन्द्र जैन ने 'देहान्तर' के संदर्भ में एक मानीखेज टिप्पणी की है। उन्होंने लिखा है– "'देहान्तर' में पति द्वारा बेटे से उधार लिए यौवन के कारण रानी शर्मिष्ठा के मन में होने वाले अन्तर्द्वंद्व को रेखांकित किया गया है पति के साथ सहवास अब उसे अपने बेटे के सहवास जैसा लगता है। नाटक का नाट्यरूप सीधा है। उसमें किसी नये कल्पनाशील नाट्यव्यवहार या शिल्प युक्ती का समर्थन तो नहीं है पर गहरी विडम्बना और एकाग्रता के कारण बड़ी सघनता है।"[11] उक्त पंक्तियों में जिस विद्रूपता को उद्घाटित किया गया है वह केवल स्त्री अस्मिता से जुड़ा नहीं है बल्कि मानव समाज के लिए ऐसा अनुत्तरित प्रश्न है जो सोचने को मजबूर करता है कि आखिर स्त्रियां ऐसा क्या करें कि उनके अस्तित्व की रक्षा हो सके। एक स्त्री के लिए अपने पुत्र के साथ शारीरिक संबंध बनाने से अधिक लज्जाजनक कुछ भी नहीं हो सकता है। परन्तु इस पुरुषवादी समाज में स्त्री को क्या कुछ नहीं भोगना पड़ता है। यह बात दीगर है कि शक्तिशाली महिलाएं विद्रोह करती हैं। शर्मिष्ठा जब ययाति को विन्दुमति के प्रेम में डूबा हुआ देखती है तब वह अपने पति के रास्ते से हट जाना चाहती है। ययाति जब उसे अपनी बाँहों में समेट लेना चाहता है तब वह उसकी बाहों में नहीं आती। ययाति के यह कहने पर कि वह उसका तिरस्कार कर रही है, पूरे गौरव के साथ वह कहती है– "यह मेरा अधिकार है।"[12] शर्मिष्ठा अपने पति ययाति से अपनी विवशता को भी स्पष्ट रूप से जाहिर करती है। वह कहती है– "मैं वृद्ध और अशक्त चक्रवर्ती की सेज पर जा सकती थी..... लेकिन कोई घोर व्यभिचारिणी भी अपने ही पुत्र की सेज पर नहीं जायेगी..... कल्पना भी नहीं कर सकोगी तुम उस दारुण वेदना की..... जब मुझे अचानक लगा कि.... कि जैसे मैं अपने ही पुत्र के साथ....।"[13]

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि 'देहान्तर' और 'हस्तिनापुर' में नन्द किशोर आचार्य ने स्त्रियों के न केवल शोषित और उत्पीड़ित रूप को चित्रित किया है बल्कि अपने अधिकारों के लिए मुखर स्त्रियों से पाठकों को रूबरू कराया है। यद्यपि नाटक का उपजीव्य ग्रन्थ महाभारत है लेकिन लेखक ने अपने स्तर पर काल्पनिक स्त्रियों के चरित्रों को गढ़ा है। दरअसल लेखक का उद्देश्य स्पष्ट है। वह दुनिया को यह दिखलाना चाहते हैं कि सहस्त्राब्दियों से स्त्रियों को अनेक अमानुषिक परम्पराओं को केवल इस लिए झेलना पड़ रहा है क्योंकि महिलाओं ने सामूहिक रूप से विरोध और विद्रोह करने की कोशिश नहीं की है। नन्द किशोर आचार्य के उक्त दोनों नाटकों की नायिकाएं स्पष्ट रूप से विद्रोह का बिगुल बजाती हैं। वे अपने अधिकारों के साथ समझौता नहीं करती हैं। सामने चाहे भीष्म जैसा महान व्यक्ति ही खड़ा क्यों न हो, वे तीखे सवाल पूछने से नहीं डरती हैं। वस्तुतः शर्मिष्ठा और शुभा जैसी स्त्रियों के चरित्रों में आधुनिक स्त्रियों का प्रतिबिंब नजर आता है, जो झंझावातों की परवाह नहीं करती हैं। अपने अस्तित्व और अस्मिता पर होने वाले हमलों का जो माकूल जवाब देने की क्षमता रखती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मधुमति, जुलाई–अगस्त,2020, भारत रत्न भार्गव, पृष्ठ–171
2. आचार्य, नन्द किशोर, रंग–यात्रा, हस्तिनापुर, सूर्य प्रकाश मंदिर, बीकानेर, संस्करण–2014, पृष्ठ–127
3. वही, पृष्ठ–117
4. वही, पृष्ठ–118
5. वही, पृष्ठ–119
6. वही, पृष्ठ–125
7. वही, पृष्ठ–126
8. वही, पृष्ठ–127
9. वही, पृष्ठ–131
10. वही
11. आचार्य, नन्द किशोर, देहान्तर, डॉ. जयदेव तनेजा, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, संस्करण–1990, फ्लैप से
12. आचार्य, नन्द किशोर, रंग–यात्रा, देहान्तर, सूर्य प्रकाश मंदिर, बीकानेर, संस्करण–2014, पृष्ठ–49
13. आचार्य, नन्द किशोर, देहान्तर, डॉ. जयदेव तनेजा, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, संस्करण–1990, पृष्ठ– 31

☻☻☻

© Copyright @ Authors